रूमी जाफ़री

और भोपाली टप्पे

रूमी जाफ़री के भोपली टप्पे

रफ़ी शब्बीर

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मार्च, 2023

© रफ़ी शब्बीर

श्याम मुंशी जी

और दिनेश राय दिन्नू भइया

के नाम

जो भोपली गंगा जमुनी तहज़ीब के ऐसे रोशन चराग़ थे जिनकी रोशनी आने वाली

पीढ़ियों को भी राह दिखाएगी

किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता, इस तरह कोई भी किताब मुकम्मल नहीं होती कई ख़ामियां हर किताब में मिल जाती है. जैसे शतरंज खेलने वाले को जीत की चाल नहीं दिखती जो शतरंज देखने वाले को नज़र आती है.. उसी तरह किताब लिखने वाले को ख़ामियां नजर नहीं आती ..जितनी पढ़ने वाले को नज़र आ जाती है. मैं भी जानता हूँ जो किताब आपके हाथ में है, उसमे कई ख़ामियां हैं.. उन ख़ामियों के जिम्मेदारों की ज़िम्मेदारी को मैंने कुछ इस तरह बाँट दिया है।

1. अगर आपको लिखने वाले की कोई ख़ामी नज़र आती है तो आप अपनी दोनों आँखें बन्द करके इसका ज़िम्मेदार कम्प्यूटर आपरेटर को मान सकते है.. लिखने वाले को कोई एतिराज़ नहीं होगा
2. अगर किताब में शामिल टप्पे पढ़ने में मज़ा नहीं आए तो यह गलती भोपालियों की है क्योंकि उनके टप्पे कहने का लब ओ लहजा ऐसा होता है जो मज़ा सुनने में आता… वो पढ़ने में नहीं आ सकता
3. अगर टप्पों की फ़ेहरिस्त नज़र नहीं आए तो इसके ज़िम्मेदार जनाब रूमी जाफ़री साहब को माना जाए कि जैसे जैसे वो सुनाते गए और हम उसे लिखते गए ..फिर वो चाहते तो यह टप्पे खुद भी लिख सकते थे मगर मुझ बेख़बर को रहबर ए मंजिल बनाने की गलती की
4. अगर लिखे गए टप्पों में आपको फैका फाकी और जुमले नज़र आते है तो

उसका ज़िम्मेदार माहौल है जिसमे फैकू लोग को पसन्द किया जा रहा है उसका असर तो आना लाज़िमी था

5. अगर लिखाई छपाई साफ सुधरी नहीं है इसकी जिम्मेदार पब्लिकेशन को नहीं बल्कि वो टप्पे बाज है जिनकी इमेज ही साफ सुधरी नहीं थी.
6. अगर किसी टप्पों में मिली जुली ज़बान नज़र आ रही है उसकी ज़िम्मेदारी भोपाल के बिगड़ी ज़बान को ज़िम्मेदार मानते हुए उर्दू हिन्दी की टीचर रूशदा जमील को ज़िम्मेदार माना जाए कि उनकी बारीक नज़र से यह गलती के गुजर गई
7. अगर टाइटल पेज या टाइटल आपको पसन्द नहीं है तो इसका ज़िम्मेदार कम्प्युटर डिजाइनर को माना जाए ..उसने अपना क्रियेटिव हुनर न दिखाते हुए गुगल से कस्ट पेस्ट आइडिया किया।
8. अगर किताब बुक स्टाल पर कम बिके तो इसका ज़िम्मेदार किसी को नहीं माने क्योकि आजकल किताब पढ़ने का टाइम किसी के पास नहीं है और जो पढ़ते है. वो ई बुक से पढ़ते है
9. अगर टप्पों में आपको टूच्चापन, छिछोरापन लगे तो उसका जिम्मेदार उस माहौल का माना जाए जिसमें लिखने वाले ने अपना ज़ियादा वक़्त बरबाद किया है

10. अगर किताब खरीदकर पढ़ने के बाद कोई ख़ामी नज़र नहीं आती तो इसके ज़िम्मेदार आज की सियासत है जिसने आपको सब्र और शुक्र करने वाला बना दिया है.
11. अगर कुछ लोग पढ़ने के बाद इस किताब को बेहूदा या भोपाल की बेइज़्ज़ती जैसे इल्ज़ाम से नवाज़ेगे उसकी एक वजह यह भी है कि उनका जिक्र इन टप्पों में नहीं है जिसकी ज़िम्मेदारी उनकी सलाहियते की कमी है जिसकी वजह से टप्पों में शामिल नहीं किया
12. अगर कोई टप्पा आपको किसी लतीफे से मिलता जुलता नज़र आ रहा है तो उसका ज़िम्मेदार वो लतीफा है जो भोपाली ज़बान में घुल मिल गया है
13. अगर कोई इस किताब की तारीफ़ करता हुआ मिले तो समझ जाए वो हमारा क़रीब या अज़ीज़ है या हमने उसको चाय नाश्ता करवाकर किताब के क़सीदे सुनाए है ,जिससे वो अपना हक़ अदा कर लिया है
14. अगर इस किताब मे कोई भी ख़ामी नज़र न आए जो नामुमकिन बात है …तो आपने इस किताब को खरीदी हो या फ्री में हासिल की हो ..किसी और को पढ़ने के लिए जरूर दे.. अगर आप तारीफ़ करेंगे तो हमें पार्ट टू निकालने मे आसानी होगी

रफ़ी शब्बीर

खरी खोटी बातें

आजकल हर चीज़ चाइना की चल रइ है. अपन को भी कहावत चाइना की याद आ गई कि बड़े बूढ़ों ने लड़ाई के तीन सौ सत्तर पैतरे गिनवाए है. जिसमें सबसे कारगर पैतरा है जब देखो चारों तरफ से घिर गए हो तो भाग लो ...अपन भी यह पैतरा तब आजमाते है जब कोई अपन को आसमान पे थेकला लगाने को केता है ..लेकिन जब कोई नइ चीज़ लेकर आता है तो अपन कभी अड़चन भी नइ बनते ..जब अपन को बताया गया कि भोपाली टप्पों पर कुछ बताए तो अल्लाह पाक परवर दिगार की ..आप पढ़ने वालों की तरह अपन के मख़ज में हुल गदागद हुई कि ये टप्पे क्या बला है?

तब अपन को बताया गिया कि भोपाली लोग जो दिमाग़ पे देते है उसको टप्पा केते है और टप्पे शुरू होते है सलमा सलीम के लफड़े से ..और पोच जाते है ईरान तूरान तक.. कुछ केने वाला कली फुन्दे लगाता है तो कुछ सुनने वाला ..वैसे मियाँ दुनिया की हर ज़बान में यह टप्पे... आटे में नमक की तरह मिलते है. मगर अपन के भोपाली नमक में आटा डालके गूंथ देते है ..इसलिए भोत बड़े बड़े सियाने लोग यह केते हुए साइट में हो जाते है कि यह भोपाली ज़बान नइ है यह तो तांगे वालो की ज़बान है जिसने भोपाल के अदब व तहज़ीब को भोत नुकसान किया है. पेले तो यह बात समझ ले ..भोपाली हो या जापानी ज़बान .. कोई निचले ऊँचले तबके की नइ